ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 244-247

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

प्रकृति और संगीत

डॉ0 बृजरानी शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर– विभागाध्यक्षा–संगीत विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-23.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: brajrani@gmail.com

सारांशः– *मनुष्य के मन एवं शरीर को चारों ओर से घेरने वाली प्राकृतिक, वैचारिक, कार्मिक, जैविक–अजैविक, दृश्य–अदृश्य परिस्थितियाँ ही उसका पर्यावरण है। मानव के ह्रदय में जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें मनुष्य अनेक साधनों द्वारा मूर्त रूप देता है। यह मूर्तरूप जिन साधनों द्वारा किए जाते हैं वे हैं मृत्तिका, प्रस्तर, काष्ठ, स्वर लहरी, शब्द आदि। इन्हीं माध्यमों से जब मानव की भावनाओं एवं विचारों की सुन्दर अभिव्यक्ति की जाती है, तब वह कला संज्ञा से अभिहित की जाती है। कलाकार, साहित्यकार या चित्रकार सभी आदिकाल से प्रकृति को अपनी रचना में संजोते आये हैं। रागों की बन्दिशों में सुर और ताल की नियमित गति में प्रकृति चित्रक मनुष्य की उस कोमल भावना को जागृत करता है, जिससे उसके जीवन में रस का महोदधि उमड़ पड़ता है और उस लावण्य से उसका जीवन परमानन्द की अनुभूति करने लगता है। कलाकार की संवेदनायें अनुभूतियाँ एवं भावनाएँ प्रकृति के प्रांगण में ही समृद्ध हो सकती है। ऋषि मुनि भी तपस्या और मनन चिन्तन के लिए वनों में ही निवास करते थे। इस प्रकार आरम्भ से ही मनुष्य का जीवन और उसका ज्ञान, विज्ञान, कला, संस्कृति सबका विकास प्रकृति के प्रांगण में ही हुआ। मनुष्य ने भी उनको अपूर्व आत्मीयता प्रदान की। संगीत विषय की विद्यार्थी होने के कारण मैंने उक्त विषय को ही अपने अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया है। संगीत का माध्यम है ध्वनि (नाद)। अनेक परीक्षणों से यह सिद्ध हो गया है कि ध्वनि–तरंगे वनस्पतियों को उत्तेजित कर सकती है और उन्हें शीघ्र बढ़ने तथा अधिक उत्पन्न करने को उत्साहित कर सकती है क्योंकि ध्वनि कोई काल्पनिक वस्तु नहीं है; वह एक सुनिश्चित, परिमेय एवं भौतिक वस्तु है। वह भी प्रकाश और ताप की तरह शक्तिमय है। पर क्या जिस कला के द्वारा हम पर्यावरण को समृद्ध कर रहे हैं, वह कला बिना स्वस्थ पर्यावरण के सुरक्षित रह सकती है ? क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य और श्रृंगारिकता ही तो उसका साधन है, जिसके आधार पर वह अपनी कला की साधना करता है। पर्यावरण प्रदूषण आपकी ज्वलंत समस्या है। नदियों का जल धुंधला हो रहा है, वृक्ष मुरझाते जा रहे हैं, नगरों में प्रदूषित वायु के कारण घुटन हो रही है और मनुष्य के उपयोग के लिए उत्पन्न की जा रही खाद्य सामग्रियों में विषाक्त रसायनों का चक्र चल रहा है। पर्यावरण से होने वाली क्षति व्यापक है। समय रहते समाधान नहीं हुआ तो मानव को अपने आपको सुधारने या पछतावा करने का मौका भी नहीं मिलेगा। अपनी पद्धति के कारण वह भासमान विविधता में अन्तर्निहित एकता का प्रेक्षण, दर्शन एवं साक्षात्कार नहीं कर पाया।*

कुंजीभूत शब्द– प्राकृतिक, वैचारिक, कार्मिक, जैविक–अजैविक, मृत्तिका, प्रस्तर, काष्ठ, स्वर लहरी, अभिव्यक्ति,कला संज्ञा।

"मनुष्य के मन एवं शरीर को चारों ओर से घेरने वाली प्राकृतिक, वैचारिक, कार्मिक जैविक–अजैविक, दृश्य–अदृश्य परिस्थितियाँ ही उसका पर्यावरण हैं।" मानव के ह्रदय में जो भाव एवं विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हें मनुष्य अनेक साधनों द्वारा मूर्त रूप देता है। जो कभी कविता कामिनी के रूप में अवतरित होता है, तो वही अनुभूति या भाव कहीं चित्त, कहीं मूर्ति, कहीं वास्तु कला की गोद में अपने को अर्पित कर देता है और जब वही अनुभूति या भाव कण्ठ के माध्यम से 'नाद' (स्वर–लहरी) को गत्यात्मक स्वरूप देकर हमारे सम्मुख उपस्थित होता है, तब हम उसे संगीत की संज्ञा देते हैं। प्रकृति में बिखरे हुए नाना प्रकार के पुष्प और रंग मानो मधुर ध्वनियों और संगीत से नित्य नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं। कलाकार, साहित्यकार या चित्रकार सभी आदि काल से प्रकृति को अपनी रचना में संजोते आये हैं। रागों की बन्दिशों में, सुर और ताल की नियमित गति में प्रकृति चित्रण मनुष्य की उस कोमल भावना को जागृत करता है जिससे उसके जीवन में रस का महोदधि उमड़ पडता है और उस लावण्य से उसका जीवन परमानन्द की अनुभूति करने लगता है। कलाकार की संवेदनायें, अनुभूतियाँ एवं भावनाऐं प्रकृति के प्रांगण में ही समृद्ध हो सकती हैं। हरियाली भरे मैदान में रंग–बिरंगे, पेड़–पौधों के बीच बैठना किसे नहीं सुहाता। प्रकृति की यह अनमोल कृति अपनी अनुपम सुन्दरता के कारण मानव को आदिकाल से ही आकर्षित करती आयी है। पेड़ों से लदे पहाड, हरी–भरी उपत्यकाएँ, दूर तक फैले चारागाह और वन फूलों से भरी तलहटियाँ, मन को न जाने किन ऊँचाईयों तक ले जाती हैं। ऋषि मुनि भी तपस्या और मनन चिन्तन के लिए वनों में ही निवास करते थे। इस प्रकार आरम्भ से ही मनुष्य का जीवन और उसका ज्ञान–विज्ञान, कला, संस्कृति सबका विकास प्रकृति के प्रांगण में ही हुआ। मनुष्य ने भी उनको अपूर्व आत्मीयता प्रदान की।

संगीत विषय की विद्यार्थी होने के कारण मैंने उक्त विषय को ही अपने अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया है। जहाँ तक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

संगीत (Performing Art) का सम्बन्ध है तो संगीत स्वयं प्राकृतिक तत्व है। प्रकृति में निरन्तर अनहद संगीत चलता रहता है, जिसका प्रभाव प्रत्येक प्राकृतिक चीज पर पड़ता है, जिससे जीवन मिलता है। मानव जाति पर संगीत का जादू चढ़कर बोलता है, तो पेड़–पौधे भी इससे अछूते नहीं।

चूंकि संगीत का सशक्त माध्यम ध्वनि है। ध्वनि सम्प्रेषण का माध्यम, हवा या वायु है। विभिन्न साधनों से ध्वनि तरंगे पेड़–पौधों, वनस्पतियों को उत्तेजित कर उन्हें शीघ्र बढ़ने और अधिक उत्पत्ति हेतु प्रोत्साहित करती हैं, यह निःसन्देह सिद्ध है। भगवान श्री कृष्ण की बांसुरी वृन्दावन के सामान्य जन–जीवन को ही प्रभावित नहीं करती थी, अपितु वृन्दावन की कुंज गलियों में भी हरियाली लहलहा जाती। पेड़–पौधे, लता वृक्ष, आम, अमराइयाँ हिलोरें लेकर झूमने लगते थे। स्मरणीय है कि अकबर के नवरत्न तानसेन ने राग बसंत बहार से बसन्त का–सा दृश्य उपस्थित कर दिया था। वन वाटिका में बसन्त खिल गया था। संगीत के वनस्पतियों पर अनेक प्रयोग हो चुके हैं। गेंदे के फूल के पौधों की ऊँचाई वायलिन पर बजाए गए 'मायामालबगौल' राग के द्वारा चालीस प्रतिशत अधिक हो गई और पत्तियों की संख्या तीस प्रतिशत बढ गई। मिर्च के पौधों पर वीणा पर बजाये गए "सिहेन्द्र' मध्यम राग द्वारा प्रयोग किया गया, फलस्वरूप तने में नब्बे प्रतिशत तथा फलों के उत्पादन में सौ प्रतिशत की वृद्धि पायी गई। इसी प्रकार जब गन्ने के पौधों को केवल एक 'प' स्वर बजाकर सुनाया गया तो गन्ने की ऊँचाई में साठ प्रतिशत, पत्तियों की ऊँचाई में एक सौ बीस प्रतिशत, और गाँठों के अनुपात में तैतालीस प्रतिशत वृद्धि हुई।

यह तो रही सांगीतिक ध्वनि तथा वाद्य यंत्रों के प्रयोग से पर्यावरण को समृद्ध बनाने की बात, जिस पर अनेक परीक्षण देश–विदेश में हो चुके हैं तथा निरन्तर प्रयोगशालाओं में व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से किए जा रहे हैं और प्रमाणित कर चुके हैं कि पर्यावरण को स्वस्थ बनाने में व्यावहारिक कला का प्रभाव पड़ता है। पर क्या जिस कला के द्वारा हम पर्यावरण को समृद्ध कर रहे हैं, वह कला बिना स्वस्थ पर्यावरण के सुरक्षित रह सकती है ? क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य और श्रृंगारिकता ही तो उसका साधन है, जिसके आधार पर वह अपनी कला की साधना करता है। चित्रकला हो, काव्य कला हो या संगीत कला हो, प्रकृति के सौन्दर्य का ही व्याख्यान करती है और यदि 'पर्यावरण' ही हरा–भरा नहीं रहा, सुन्दर स्वच्छ हिलोरें भरती मदमाती नदियाँ ही नहीं हुईं, ऋतुओं का आवागमन ही नहीं हुआ, तो हमें बसंत ऋतु, वर्षा ऋतु और पतझड़ में अन्तर ही नहीं पता चलेगा।

ऐसे वातावरण में कोई कला जीवित रह सकती है क्या ? अतः मेरे मन मस्तिष्क ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि व्यावहारिक कला पर प्रदूषित पर्यावरण का कितना घातक प्रभाव पड़ सकता है और मैंने अपने शोध–प्रपत्र का यही विषय चुना, क्योंकि प्रकृति से ही प्रेरणा लेकर संगीतकार अपनी बन्दिशों को सजाता संवारता है। संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्दानुभूति कराना है और आनन्द वहीं है, जहाँ सौन्दर्य है और सौन्दर्य हमारे वातावरण, हमारी प्रकृति में ही समाया हुआ है। यही कारण है कि लौकिक या पारलौकिक, संगीत चाहे जो भी हो, प्रकृति चित्रण से सराबोर है। लोक संगीत हो या शास्त्रबद्ध संगीत, सबका पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि कला के सृजन की तीन प्रक्रियायें हैं–अनूभुति, अभिव्यक्ति और आस्वादन। सामान्यतः भावुक एवं कुशल कला का सृजन करते हैं तो कोई भी कलाकार कला का सृजन करने से पहले अपनी कल्पना द्वारा उसकी रूपरेखा का अंकन अपने ह्रदय पटल पर कर लेता है और फिर उसी को अपनी कला द्वारा मूर्तरूप देता है। प्राकृतिक वातावरण के परिवर्तनानुसार 6 ऋतुएं हैं–बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर। प्रत्येक ऋतु के प्राकृतिक परिवर्तन द्वारा–ह्रदय स्थल पर भी अनुकूल परिवर्तन होता है, प्रभाव पड़ता है। प्रकृति के अनुरूप विभिन्न भावों का उदय मानव मन में होता है। यही कारण है कि संगीतकारों ने अनेक रागों को 'ऋतु राग' की श्रेणी में रखा है–यथा बसंत ऋतु (बसंत बहार, हिंडोल आदि), वर्षा ऋतु (मियां मल्हार, मेघ मल्हार, सूरमल्हार, रामदासी मल्हार आदि)।

केशव और प्रवीणराय के आश्रयदाता, इन्द्रजीत सिंह 'धीरज' के एक ध्रुपद का कुछ अंश किस तरह प्रकृति को उजागर कर रहा है –

"बोलत मोर चहंदिसि चातक पिक दादुर,
घोटि घुमण्डि घहरानौ घन।
इत दामिनी भामिनी भूमि भारी हरी भई जित
तिति वे लिपिटि झुकि झुमि सघन वृन्दावन।।"
इसी प्रकार राग जैजैवन्ती के छोटे ख्याल की
बन्दिश में प्रकृति वर्णन का उदाहरण–
"दामिनी दमके डर मोहे लागे
उमगे दल–बादल श्याम घटा" तथा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

कारे बदरवा रे घन छाय,
छाय मोरा जियरा धड़के
प्रणवा पियरवारे घन छाय,
कारे बदरवा रे घन छाय
दादुर मोर पपीहा बोले,
शोर करत झींगुरवा लागे डरवा रे घन छाय,
कारे बदरवा रे घन छाय।

राग रागेश्री की बन्दिश का प्रकृति चित्रण–

"बन बन बोलत कोयलिया,
आई बसंत बाहरिया
फूली चमेली बेलरिया,
बन बन बोलत कोयलिया
उमगे नए–नए पतवा,
हरे–हरे मोहत मनवा
नाचत मोरवा सुन्दरवा,
बन–बन बोलत कोयलिया।"

इस प्रकार संगीत में प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने वाली बंदिश ही मुख्यतः गाई जाती है। यमुना में जल भरते समय कान्हा की मुरली की धुन सुनने पर कोई कार्य न सूझना, राग 'प' की बन्दिश का उदाहरण :–

मुरली की धुन सुनी सखीरी अज, सूझत न कछु काम काज अज, जात रही थी यमुना जल भरन, भरन लागि डूब गई गगरि भोरी, कारि करूँ कछु सूझत नाहीं, छीन लई चित बंशी मधुर अज, यह सारे रागों की बन्दिशों का उदाहरण देने का तात्पर्य केवल इतना है कि युग युगांतरों से भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं सनातन धर्म की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्रियाकलापों की केन्द्र बिन्दु रही, पौराणिक आख्यानों में यम की पुत्री के नाम से सम्बोधित पतित पावनी यमुना नदी को सनातन धर्मावलम्बी आदि काल से पवित्र एवं पूज्यनीय मानते आये हैं। भगवान श्री कृष्ण के जन्म से शैशव काल में उनकी बाल क्रीडाओं, युवावस्था में गोपियों के संग उनकी रास लीलाओं प्राणिमात्र की प्यास बुझाने वाली श्यामवर्णी यमुना नदी आज दिल्ली, आगरा और मथुरा जैसे नगरों में औद्योगिक, कचरा, कूड़ाकरकट, शहरों की गन्दगी के कारण एक गन्दा नाला बन चुकी है। भगवान 'शिव' की जटाओं से उत्पन्न गंगा नदी का पानी इतना दूषित हो गया है कि जिसकी कल्पना करने पर साक्षात मृत्यु दृष्टिगत होती है।

इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल से अब तक संगीत साधक गंगा और यमुना के तट पर ही अपनी संगीत साधना करते आये हैं। नारद ऋषि ने नदी के जल में तैरती हुई कमल की पंखुडियों में पड़ती ओस की बूंदों की ध्वनि से ही सुर–ताल को आत्मसात किया था। स्व0 उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जी की शहनाई वादन की साधना बनारस की गंगा के तट पर ही सफल हुई। क्योंकि नदियों के तट की स्वस्थ जलवायु में डूबकर कलाकार की कल्पना की उड़ान नित नए स्वर बिखेरती है। सौन्दर्य का आकर्षण कलाकार को प्रसन्न रखता है। सौन्दर्य की भावना जगाए रखना और जीवन को संवेगों और संवेदनाओं से समृद्ध बनाना किसी भी पर्यावरण का अनिवार्य तत्व कहा जा सकता है। जब हम आकाश में चाँद खिला देखते हैं, तो ह्रदय को कितनी शीतलता मिलती है। सुबह जब अरूणोदय होता है, तो मन कितने संकल्पों से भर जाता है। हरा भरा वन और उसमें खिले फूल मन को किस रहस्य लोक में ले जाते हैं। पहाड़, नदी और समुद्र तट कितनी तरह से भावनाओं को उद्वेलित करता है। वन में स्वच्छन्द फिरते हुए हिरण, शेर, हाथी और पेड़ों पर फुदकते विभिन्न रंगों के पक्षी मन को कितना आनन्द देते हैं। हवा तन को स्पर्श करती है तो तन मन सिंहर उठता है। जल मन में तरंगें उठाता है और कोई भी कला इन कल्पनाओं के झूले में भी झूलकर ऊँची पेंग ले सकती है। यदि हमें अपनी कला को, जिसे हम पौराणिक काल से संजोते चलेआ रहे हैं, उसे सजीव रखना है तो, पर्यावरण को स्वस्थ रखना ही होगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब यह सब यर्थाथता इतिहास के पन्नों तक ही सिमटकर रह जायेगी क्योंकि जब जंगल नहीं होंगे तो 'गज' नहीं दिखेंगे अतः 'गज परन' मिथ्या समझी जायेगी। नदियों में पीने का पानी नहीं होगा तो वह– 'जात रही थी यमुना जल भरन' या 'पपीहा' नहीं दिखेंगे, तो पियु पियु रटत पपीहरा सार्थक नहीं होगा। बसंत ऋतु और पतझड़ में जब अन्तर ही नहीं होगा तो–'कोयलिया बोले अमवा की डार पर, ऋतु बसंत को देत संदेसवा' को कौन स्वर देगा। मानव जीवन में रस की कल्पना हास्यास्पद होगी और जब जीवन में उल्लास नहीं, उमंग नहीं,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

आनन्द नहीं, तो वह जीवन जीव रहते हुए भी निर्जीव ही होगा। प्राण रहते हुए भी निस्प्राण ही होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ0 अरूण कुमार सेन।
2. पर्यावरण अध्ययन – दयाशंकर त्रिपाठी।
3. निबन्ध संगीत – लक्ष्मी नारायण गर्ग।
4. पर्यावरण और आत्म निर्भरता – अरविंद गुप्ता।
5. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति कृमिक पुस्तकमाला – पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे।
6. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी – आर0 राजगोपालन।
7. ध्रुवपद समीक्षा (भरतव्यास) उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी।
8. भारतीय संगीत का इतिहास – उमेश चन्द्र जोशी।
9. पर्यावरण शिक्षण – रमा शर्मा, एम0के0 मिश्रा।

*****